फरीदाबाद
मजदूर समाचार

राहें तलाशने-बनाने के लिए मजदूरों के अनुभवों व विचारों के आदान-प्रदान के जरियों में एक जरिया

महीने में एक बार छापते हैं, 7000 प्रतियाँ फ्री बाँटने का प्रयास करते हैं। मजदूर समाचार में आपको कोई बात गलत लगे तो हमें अवश्य बतायें, अन्यथा भी चर्चाओं के लिए समय निकालें।

डाक पता : मजदूर लाईब्रेरी, आटोपिन झुग्गी, एन.आई.टी. फरीदाबाद - 121001

नई सीरीज नम्बर 250 1/- अप्रैल 2009

पहचान और पहचान की जटिलतायें (3)

"मैं" का उदय - "मैं कौन हूँ ?" - एक "मैं" में कई "मैं"- और "मैं" के पार

★इकाई और समूह-समुदाय के बीच अनेक प्रकार के सम्बन्ध समस्त जीव योनियों में हैं। मानव योनि में भी दीर्घकाल तक ऐसा ही था। चन्द हजार वर्ष पूर्व ही पृथ्वी के छिटपुट क्षेत्रों में मानवों के बीच "मैं" का उदय हुआ। मनुष्यों के प्रयासों के बावजूद अन्य जीव योनियों के समूह-समुदाय में इकाई ने "मैं" के पथ पर प्रगति नहीं की है। ★एक जीव योनि के एक समूह-समुदाय की इकाईयों में तालमेल सामान्य हैं पर जब-तब खटपटें भी होती हैं। एक जीव योनि के एक समूह-समुदाय के उस योनि के अन्य समूह-समुदायों के संग आमतौर पर सम्बन्ध मेल-मिलाप के होते हैं पर जब-तब खटपटें भी होती हैं। आपस की खटपटें घातक नहीं हों यह किसी भी योनि के अस्तित्व के आधारों में है। इसलिये प्रत्येक जीव योनि में यह रचा-बसा है। एक जीव योनि के अन्दर की लड़ाई में किसी की मृत्यु अपवाद है। मानव योनि के अस्तित्व के 95 प्रतिशत काल में ऐसा ही रहा है। इधर मनुष्य द्वारा मनुष्य की हत्या, मनुष्यों द्वारा मनुष्यों की हत्यायें मानव योनि को समस्त जीव योनियों से अलग करती हैं। ★अपनी गतिविधियों के एक हिस्से को भौतिक, कौशल, ज्ञान रूपों में संचित करना जीव योनियों में सामान्य क्रियायें हैं। बने रहने, विस्तार, बेहतर जीवन के लिये ऐसे संचय जीवों में व्यापक स्तर पर दिखते हैं। प्रत्येक जीव योनि में पीढी में, पीढियों के बीच सम्बन्ध इन से सुगन्धित होते हैं। मानव योनि में भी चन्द हजार वर्ष पूर्व तक ऐसा ही था। इधर विनाश के लिये, कटुता के लिये, बदतर जीवन के लिये भौतिक, कौशल, ज्ञान रूपों में संचय के पहाड़ विकसित करती मानव योनि स्वयं को समस्त जीव योनियों से अलग करती है।

कीड़ा-पशु-जंगली-असभ्य बनाम सभ्य को नये सिरे से जाँचने की आवश्यकता है।

लगता है कि निकट भविष्य में पहचान की राजनीति का ताण्डव बहुत बढेगा। मानव एकता और बन्धुत्व की सदइच्छायें विनाश लीला को रोकने में अक्षम तो रही ही हैं, अक्सर ये इस अथवा उस पहचान की राजनीति का औजार-हथियार बनी हैं। हम में से प्रत्येक में बहुत गहरे से हूक-सी उठती हैं जिनका दोहन-शोषण सिर-माथों पर बैठे अथवा बैठने को आतुर व्यक्ति-विशेष द्वारा किया जाना अब छोटी बात बन गया है। सामाजिक जीवन के अन्य क्षेत्रों की ही तरह पहचान की राजनीति में भी संस्थायें हावी हो गई हैं। संस्थाओं के साधनों और पेशेवर तरीकों से पार पाने के प्रयासों में एक योगदान के लिये हम यह चर्चा कर रहे हैं।

●अंश द्वारा सम्पूर्ण पर आधिपत्य के प्रयास सभ्यता की जंजीरों का गठन करते हैं। पृथ्वी सौर मंडल का एक सामान्य ग्रह है और सूर्य ब्रह्मांड में एक आम तारा....... अपने अस्तित्व के 95 प्रतिशत दौर में मानव योनि का व्यवहार प्रकृति के एक अंश वाला रहा है। परन्तु इन पाँच-सात हजार वर्ष के दौरान स्वयं के प्रकृति का एक अंश होने की वास्तविकता को मानव योनि अधिकाधिक नकारती आई है। नियन्त्रण, नियन्त्रण-दर-नियन्त्रण हमारी हवस बनती गई है। अपनी इंद्रियों पर नियन्त्रण, अपने आप पर नियन्त्रण एक छोर बना है तो "अन्य" सबकुछ पर जकड़ दूसरा छोर।

– हालाँकि मानव योनि का नियन्त्रण आसमान पार कर रहा है, नाथना शब्द आज प्रचलन में नहीं है। नाथना मानी नियन्त्रण में करना.....

बैल की नाक छेद कर उसमें से रस्सी पार करने को भी नाथना कहते हैं। और, बैल के नाक की रस्सी को नाथ कहते हैं। कन्द-मूल बटोरने और शिकार की अवस्थाओं में हमारे पुरखों का व्यवहार मुख्यतः प्रकृति के एक अंश वाला था। पशुओं को नाथने ने बहुत कुछ बदलना आरम्भ किया।

बैल को नाथना। गाय का शोषण। यह पशुओं पर ही नहीं रुका। पशुओं के नाथ, दासों के स्वामी बने। और, पति के पर्याय हैं स्वामी तथा नाथ.....

– प्रकृति में एक स्त्री की यौन-सम्बन्धी क्षमता कई पुरुषों के बराबर है। एक पुरुष एक स्त्री की भी यौन सन्तुष्टि नहीं कर सकता.... इसलिये नाथना।

स्त्री और पुरुष के बीच सतत द्वन्द्व की स्थिति बनी। शक-शंका-क्रूरता की कोई सीमा नहीं रही। और तिरिया-चरित्तर के किस्से। आज पितृत्व निर्धारण के लिये डी एन ए परीक्षण......

यह तो शस्त्र के साथ शास्त्र की जुगलबन्दी रही कि नाथ-नथनी-नथनिया स्त्री का आभूषण बनी। और यही बात टूम-जेवर-गहनों में कड़ी-गोड़हरा वाली बेड़ी की।

पुरुषों को दोष देना आसान है। परन्तु यह उस प्रक्रिया को छिपा देना है जिसने अकस्मात् प्रारम्भ में पुरुष को "मैं" का वाहक वाहन बना दिया था। और, यह "मैं" की पीड़ा का ही कमाल रहा है कि एक पुरुष ने कई स्त्रियाँ-पत्नियाँ रखी।

● समुदायों की टूटन ने तत्काल समुदायहीनता को जन्म नहीं दिया। समुदायों की टूटन अनेक प्रकार के विकृत समुदायों का सिलसिला लिये रही है। ऐसे में "मैं" के वाहक पुरुष की पीड़ा को कुछ हद तक विकृत समुदाय कम करते रहे हैं। परन्तु मण्डी-मुद्रा और मजदूरी-प्रथा के संग समुदायहीनता, अकेलापन छलाँगें लगाते आते हैं......

– विकृत से विकृत समुदाय भी व्यक्ति को कुछ सहारे प्रदान करते हैं। जबकि मण्डी-मुद्रा और विशेषकर मजदूरी-प्रथा पूर्णतः बेसहारा व्यक्ति की माँग करते हैं। ऐसे में पहचान की एक राजनीति ने नये गुल खिलाये। नारी के साथ भेदभाव, दुराचार, क्रूरता के तथ्यों को आधार बना कर विकृत समुदायों द्वारा प्रदत सहारों पर आक्रमणों का सिलसिला। मण्डी की बढती शक्ति के सम्मुख पुरुष की यह बढती कमजोरी है जो स्त्रियों को भी मजदूर बनने को मजबूर कर रही है। पहचान की एक राजनीति इस वास्तविकता पर पर्दा डाल कर इसे स्त्री-सशक्तीकरण प्रस्तुत करती है। नारी के मजदूर बनने को मुक्ति की राह पर कदम देखना-दिखाना......

– व्यक्ति को अपनी सामाजिक संरचना की इकाई बनाने को अग्रसर मण्डी-मुद्रा, मजदूरी-प्रथा के लिये विकृत समुदाय भी बाधा हैं। इसलिये अनेक प्रकार की पहचान की राजनीतियों के जरिये विकृत समुदायों का इस्तेमाल करती मण्डी-मुद्रा और मजदूरी-प्रथा विकृत समुदायों पर आक्रमण भी जारी रखे हैं। यह व्यक्ति को इकाई बनाना है जिसने नारी को भी मजदूर बना कर "मैं" के वाहक वाहन में बदल दिया है।

●व्यक्ति के इकाई बनने के संग मानव योनि में सार्विक होता "मैं" सामान्य सम्बन्धों के लिये स्थान लीलता जाता है। पुरुष का "मैं" अपने वंश के प्रसार में अपनी पीड़ा कम करने के स्वपन देखता था। इधर पुरुष के "मैं" के संग आन खड़ा स्त्री का "मैं" वंश के प्रचलन **(बाकी पेज दो पर)**

दर्पण में चेहरा-दर-चेहरा

चेहरे डरावने हैं.... आईना ही नहीं देखें या फिर हालात बदलने के प्रयास करें?

शाही एक्सपोर्ट मजदूर : "आई पी 1 सैक्टर-28 स्थित फैक्ट्री में नवम्बर 08 में एक ठेकेदार के जरिये कम्पनी ने फिनिशिंग विभाग में 50 महिला और 50 पुरुष मजदूर 8 घण्टे के 75 रुपये में रखे थे, ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं। अब 5 ठेकेदारों के जरिये रखे करीब 3000 मजदूर फैक्ट्री में हैं। सुबह 9 से रात 8 की शिफ्ट में हैण्ड वर्क में ठेकेदार के जरिये रखी 600 महिला और 200 पुरुष मजदूर हैं। होम फिनिशिंग में ठेकेदार के जरिये रखे 1000 पुरुष मजदूर साँय 6 से अगले रोज सुबह 6 बजे की शिफ्ट में हैं। दिन में कटिंग में ठेकेदार के जरिये रखे 100 मजदूर हैं तो सैम्पलिंग में भी हैं। प्रोडक्शन (सिलाई) में ठेकेदार के जरिये रखे 150 टेलर हैं। ट्रान्सपोर्ट में कम्पनी ने स्वयं 40 ड्राइवर रखे हैं। कहा कि 1500 रुपये बढा देंगे, 10 घण्टे ड्युटी करो। ड्राइवरों ने पैसे पे-स्लिप पर देने को कहा..... कम्पनी ने ठेकेदार के जरिये 6 ड्राइवर रख लिये हैं। ठेकेदारों के जरिये रखे मजदूरों की ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं। इधर मार्च के तीसरे सप्ताह में सुबह 10 से 12 बजे तक जाँच वाले फैक्ट्री में रहे। कम्पनी को पहले से पता था इसलिये ठेकेदारों के जरिये रखे सब मजदूरों को इस दौरान बाहर रखा। स्थाई मजदूरों के कार्ड पंच होते हैं जबकि ठेकेदारों के जरिये रखे वरकरों की हाजिरी अलग से लगती है। वैसे कम्पनी ने स्वयं के 10 गार्ड, पैराग्रिल सेक्युरिटी के जरिये 40 गार्ड तथा सी एम के 5 गार्ड लगा रखे हैं। फैक्ट्री में **वाल मार्ट, केल्विन, ओल्ड नेवी** आदि का माल बनता है। इनके दबाव में इधर फरवरी से कम्पनी स्थाई मजदूरों को दूसरे व चौथे शनिवार को छुट्टी देने लगी है पर..... पर बदले में ओवर टाइम के 16 घण्टे काट रही है। स्थाई मजदूरों को भुगतान दुगुनी दर से है इसलिये ओवर टाइम के 600 रुपये उड़ जाते हैं..... तनखा 7 तारीख को मिलती है और देनदारी चुका कर 10 तारीख को सोचते हैं कि 27 दिन खर्च कैसे चलेगा? यह 600 रुपये कटना भारी पड़ता है। जिनका माल बनता है वो तो यह भी कहते हैं कि अरजेन्ट हो तब भी महीने में 16 घण्टे से ज्यादा ओवर टाइम नहीं जबकि..... ठेकेदारों के जरिये रखे मजदूरों के होते हुये भी स्थाई मजदूरों का अब 60-100 घण्टे ओवर टाइम प्रतिमाह। फैक्ट्री में काम करते 3000 स्थाई मजदूरों में 60 प्रतिशत महिला मजदूर हैं। शिशु कक्ष है पर बच्चों के फल-दूध का आधा हिस्सा स्टाफ वाले खा जाते हैं। इधर मार्च में कैन्टीन में समोसा 5 से 7 रुपये का किया पर विरोध के कारण 6 रुपये में।"

ब्रॉन लैब श्रमिक : "13 इन्डस्ट्रीयल एरिया स्थित फैक्ट्री में रात 7 बजे काम आरम्भ करते मजदूर अगले रोज सुबह 8½ तक काम करते हैं। इस 13½ घण्टे ड्युटी वाले 70 मजदूर ठेकेदारों के जरिये रखे हैं और इनकी ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं। इन्हें 8 घण्टे के 90 रुपये देते हैं और ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। दिन की शिफ्ट में 12 स्थाई मजदूर, सरकार द्वारा निर्धारित न्यूनतम वेतन तथा ई.एस.आई. व पी.एफ. लागू वाले ठेकेदार के जरिये रखे 60 मजदूर, और चार ठेकेदारों के जरिये रखे 150 वरकर हैं जिनकी ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं, तनखा 2500 रुपये। दिन की शिफ्ट में कभी 2 तो कभी 4 घण्टे ओवर टाइम, भुगतान सिंगल रेट से। टेबलेट, कैपसूल, लिक्विड, इंजेक्शन — सब विभागों में काम का बोझ तो है ही, उड़ते दवाई के पाउडर वाले टेबलेट विभाग में तो बहुत मजबूरी वाले मजदूर ही रहते हैं। फैक्ट्री में 100 महिला और 200 पुरुष मजदूर काम करते हैं।"

अरविन्द इंजिनियरिंग कामगार : "प्लॉट 38 सैक्टर-27 सी स्थित फैक्ट्री में सुबह 8 से रात 12 बजे की एक शिफ्ट है। ओवर टाइम पर जबरन रोकते हैं, तबीयत खराब होने पर भी नहीं छोड़ते। गाली देते हैं। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। एक दिन नहीं जाने पर तीन दिन वापस भेज देते हैं। कम्पनी ने स्वयं टूल रूम के 5 मजदूर ही रखे हैं। हम 75 को दो ठेकेदारों, ब्राइट व टाइगर के जरिये रखा है। हैल्परों की तनखा 2500 और ऑपरेटरों की 3600 रुपये।"

खेमका कन्टेनर्स वरकर : "प्लॉट 276 सैक्टर-24 स्थित फैक्ट्री में हैल्परों को 8 घण्टे के 90 रुपये देते हैं, ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं। सुबह 8½ से रात 9 की एक शिफ्ट है। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। तनखा बढाने की माँग पर 17 मार्च को 8 मजदूर नौकरी से निकाल दिये।"

भारत इन्टरनेशनल मजदूर : "12 एकता नगर, बुढेया नाला के पास स्थित फैक्ट्री में 12 घण्टे रोज पर 26 दिन के हैल्परों को 3000-3200 और ऑपरेटरों को 3700 रुपये देते हैं। ई.एस.आई. व पी.एफ. 40 मजदूरों में किसी की नहीं। फरवरी की तनखा आज 20 मार्च तक नहीं दी है।"

साँई टैक्स श्रमिक : "प्लॉट 4 सैक्टर-27 सी स्थित फैक्ट्री में हैल्परों को 12 घण्टे प्रतिदिन पर 26 दिन के 3000 और ऑपरेटरों को 4-500 रुपये। ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं। फरवरी की तनखा आज 20 मार्च तक नहीं दी है। नौकरी छोड़ने पर 20-25 दिन के किये काम के पैसे नहीं देते — पैसे माँगने फैक्ट्री पहुँचने पर गाली देते हैं।"

वमानी ओवरसीज कामगार : "प्लॉट 137-138 सैक्टर-24 स्थित फैक्ट्री में काम पूरे महीने होता है पर ई.एस.आई. व पी.एफ. आधे महीने के ही काटते हैं, कभी 150 तो कभी 200 रुपये।"

ओसवाल इलेक्ट्रिकल मजदूर : "48-49 इन्डस्ट्रीयल एरिया स्थित फैक्ट्री में दो ठेकेदारों के जरिये रखे एक हजार वरकरों के सरकार द्वारा निर्धारित न्यूनतम वेतन, ई.एस.आई., पी.एफ. हैं। लेकिन इन बड़े ठेकेदारों ने फेटलिंग विभाग में छोटे ठेकेदारों के जरिये जो मजदूर रखे हैं उनकी तनखा 2400 रुपये, ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं। और, सी एन सी विभाग में अधिकतर ऑपरेटरों को हैल्पर ग्रेड देते हैं। मात्र 20 स्थाई मजदूर हैं। फैक्ट्री में **टी वी एस मोटरसाइकिल** तथा **यूकाल** के लिये पुर्जे बनते हैं और नवम्बर 08-फरवरी 09 के दौरान सप्ताह में 3-4 दिन ही काम होता था। अब हफ्ते में 6 दिन काम। डाई कास्टिंग विभाग में 8-8 घण्टे की तीन शिफ्ट और सी एन सी तथा फेटलिंग विभागों में 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट हैं। 14-16 घण्टे रोकने पर रोटी के लिये 12 रुपये और 24 घण्टे रोकने पर 20 रुपये देते हैं। बारह घण्टे में कम्पनी एक कप चाय भी नहीं देती। ओवर टाइम का भुगतान दुगुनी की बजाय सिंगल रेट से। डाई कास्टिंग में एक्सीडेन्ट बहुत होते हैं, मजदूर जलते रहते हैं।"

एजीको कन्ट्रोल कामगार : "20/1 इन्डस्ट्रीयल एरिया (ढाण्ढा कम्पलैक्स) स्थित फैक्ट्री में कार्य करती 50 महिला मजदूरों की तनखा 2200 रुपये और 35 पुरुष मजदूरों की 2500 रुपये। शिफ्ट सुबह 8 से रात 7 की, ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से।" **फाइबर टैक्स श्रमिक :** "प्लॉट 89 सैक्टर-6 स्थित फैक्ट्री में हैल्परों की तनखा 2500 रुपये।"

डी. ए. के 175 रुपये जुड़ने के बाद जनवरी 2009 से हरियाणा में अकुशल श्रमिक (हैल्पर) के लिये निर्धारित न्यूनतम वेतन 3840 रुपये (8 घण्टे के 148 रुपये)।

गुड़गाँव......(पेज तीन का शेष)

कृष्णा लेबल कामगार : "प्लॉट 162 उद्योग विहार फेज-1 स्थित फैक्ट्री में काम करते 2000 मजदूरों की ड्युटी 8 की बजाय 9 घण्टे है। सरकार द्वारा निर्धारित न्यूनतम वेतन 9 घण्टे प्रतिदिन पर। ओवर टाइम 9 घण्टे बाद के समय को कहते हैं और उसका भुगतान भी सिंगल रेट से। तनखा से ई.एस.आई. व पी.एफ. के पैसे काटते हैं पर नौकरी छोड़ने के बाद फण्ड का पैसा निकालने का फार्म कम्पनी भरती ही नहीं।"

लोगवैल फोर्ज वरकर : "प्लॉट 116 उद्योग विहार फेज-1 स्थित फैक्ट्री में 2 फरवरी से फिर 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट आरम्भ हो गई हैं। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। दो ठेकेदारों के जरिये रखे हैल्परों की तनखा 3510 रुपये। पी.एफ. की पर्ची 2005 के बाद नहीं दी है।"

पहचान......(पेज एक का शेष)

में "मैं" के बने रहने के भ्रम को समाप्त करता है। "बच्चे नहीं चाहियें" का एक कारण यह भी है। इसलिये आज जन्म के पश्चात मृत्यु की निश्चितता "मैं" को अधिकाधिक पगला रही है। इस सन्दर्भ में यौन सम्बन्धों को देखें। एक सहज, आनन्ददायक क्रिया के स्थान पर यह एकमेव (अंग्रेजी में THE) सम्बन्ध बन गया है। स्त्री हो चाहे पुरुष, सम्भोग की भूख हर समय बनी रहती है और अनेक प्रकार के सौदागर इसे भुनाते हैं। ऐसे में पीड़ा से एक राहत के स्थान पर यौन सम्बन्ध मनोरोगी पीड़ा का एक कारक बन गये हैं।

स्त्री हो चाहे पुरुष, बढता अकेलापन हम सब के सम्मुख मुँह बाये खड़ा है। इस सिलसिले में "मैं कौन हूँ?" पर चर्चा आगे करेंगे और अपने अंश होने के तथ्य को ध्यान में रखेंगे। (जारी)

गुड़गाँव में मजदूर

मोडलामा मजदूर : "प्लॉट 5 सैक्टर-4 आई एम टी मानेसर स्थित फैक्ट्री में 150 मजदूर 12-12 घण्टे की दो शिफ्टों में कम्प्युट्रीकृत मशीनों से कढाई का कार्य करते हैं। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। घर जाने पर नौकरी से निकाल दिया लेकिन दिसम्बर में किये 125 घण्टे ओवर टाइम तथा जनवरी की 17 दिन की तनखा व 65 घण्टे ओवर टाइम के पैसे आज 28 मार्च तक नहीं दिये हैं। अपने पैसों के लिये फैक्ट्री जाने पर अन्दर नहीं जाने देते, कहते हैं कि कोई पेमेन्ट नहीं है और भगा देते हैं। फैक्ट्री में काम करते आधे मजदूरों की ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं।"

आनन्द निशिकावा श्रमिक : "प्लॉट 119 उद्योग विहार फेज-1 स्थित फैक्ट्री में कम्पनी ने स्वयं 7 मजदूर भर्ती किये हैं और हम 500 को एक ठेकेदार के जरिये रखा है। हम वर्ष के बारहों महीने फैक्ट्री में काम करते हैं पर कागजों में दस महीने ही दिखाते हैं। ऐसा कई वर्ष से कर रहे हैं। हाजिरी के लिये हमें कार्ड नहीं देते, एक नम्बर होता है और हर तीन महीने में नम्बर बदल देते हैं। तनखा से ई.एस.आई. व पी.एफ. के पैसे काटते हैं पर ई.एस.आई. कार्ड नहीं देते और फण्ड के पैसे कुछ मजदूरों को ही मिलते हैं। जनवरी तक हैल्परों की तनखा 3510 रुपये थी पर अब फरवरी की 3665 रुपये दी है। दो शिफ्ट 12-12 घण्टे की और ओवर टाइम का भुगतान सिंगल रेट से। तनखा हर महीने देरी से, फरवरी की 17 मार्च को दी।"

धीर इन्टरनेशनल कामगार : "प्लॉट 299 उद्योग विहार फेज-2 स्थित फैक्ट्री में सिलाई कारीगरों ने 10 मार्च को काम बन्द कर दिया तब उन्हें फरवरी की तनखा दी — फिनिशिंग विभाग में 18 मार्च को दी। ठेकेदारों के जरिये रखे हैल्परों की तनखा 2500 रुपये और फरवरी की आज 28 मार्च तक नहीं दी है। काम सुबह 9½ आरम्भ होता है और सिलाई कारीगरों को रात 10¾ पर छोड़ते हैं जबकि फिनिशिंग विभाग वालों तथा ठेकेदारों के जरिये रखे मजदूरों को रात 2 बजे छोड़ते हैं, 4-6 बजे सुबह तक रोक लेते हैं। फरवरी में 160-180 घण्टे ओवर टाइम के, भुगतान 28 मार्च तक नहीं और माँगने पर कार्ड काट देते हैं, मारपीट भी।"

एम वाई फैशन (मेघा ट्रेडर्स) वरकर : "प्लॉट 488 उद्योग विहार फेज-3 स्थित फैक्ट्री में काम करते 3000 मजदूर सुबह 9 व 9½ से रात 9 तक काम करते हैं और महीने में 20/रोज रात 2 बजे तक। महीने में 200 घण्टे ओवर टाइम, भुगतान सिंगल रेट से भी कम, 13 रुपये प्रतिघण्टा। तनखा से ई.एस.आई. व पी.एफ. के पैसे काटते हैं पर ई.एस.आई. कार्ड नहीं देते और फण्ड नम्बर नहीं बताते। ठेकेदार के जरिये फिनिशिंग में 800 मजदूर — बसें भर कर आती हैं, दो-चार दिन काम करवा कर निकाल देते हैं।"

मोड सिरप इन्डस्ट्रीज मजदूर : "प्लॉट 558 उद्योग विहार फेज-5 स्थित फैक्ट्री में सुबह 9 से रात 7½ की ड्युटी है। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से, फरवरी के आज 28 मार्च तक नहीं दिये हैं। तनखा से ई.एस.आई. व पी.एफ. के पैसे काटते हैं पर ई.एस.आई. कार्ड नहीं देते और फण्ड मिलता नहीं।"

गार्ड : "कापसहेड़ा में कार्यालय वाली **ए बी एस सेक्युरिटी** हम गार्डों को 12 घण्टे प्रतिदिन ड्युटी पर 30 दिन के 4500 रुपये देती है और ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नही।"

भारत इन्टरनेशनल श्रमिक : "प्लॉट 189 उद्योग विहार फेज-1 स्थित फैक्ट्री में चमड़े के जैकेट बनाते सब 300 मजदूर दो ठेकेदारों के जरिये रखे हैं। हमारी ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं। कारीगरों की कागजों में तनखा 14000-15000 रुपये दिखाते हैं पर देते 8 घण्टे के 140-160 रुपये हैं, चन्द लोगों को 200 रुपये। तनखा सप्ताह में, शनिवार को। काम का अत्याधिक बोझ — 2 घण्टे में 5 पीस ही बहुत होते हैं पर 14 पीस निर्धारित करते हैं। महीने में 20-40 घण्टे ओवर टाइम, भुगतान सिंगल रेट से।"

रेडनिक एक्सपोर्ट कामगार : "प्लॉट 294 उद्योग विहार फेज-2 स्थित फैक्ट्री में सुबह 9 व 9½ काम आरम्भ होता है और रात को 2 व 2¼ बजे छोड़ते हैं। भोजन के लिये 18 रुपये देते हैं। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से — कहते हैं कि कोई पूछे तो कहना कि ओवर टाइम बहुत कम होता है और भुगतान दुगुनी दर से है। चार सौ मजदूर हैं, ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं — कहते हैं कि कोई पूछे तो कहना कि ई.एस.आई. व पी.एफ. हैं। हैल्परों की तनखा 3510 रुपये।"

भारत एक्सपोर्ट वरकर : "प्लॉट 493 उद्योग विहार फेज-3 स्थित फैक्ट्री में 300 मजदूर सुबह 9 से रात 1 बजे तक काम करते हैं। महीने में 200 घण्टे ओवर टाइम, भुगतान सिंगल रेट से। हर महीने गड़बड़ी कर 2-3 हाजिरी उड़ा देते हैं. .... एक मजदूर को तो जनवरी में पूरे महीने काम करने पर 19 दिन के ही पैसे दिये, बोले कम्प्युटर गड़बड़ा गया, पैसे देंगे, पर दिये नहीं। तनखा से ई.एस.आई. व पी.एफ. के पैसे काटते हैं पर ई.एस. आई. कार्ड नहीं देते और फण्ड राशि मजदूरों को नहीं मिलती — फार्म ही भर कर नहीं देते। साहब गाली देते हैं।"

ऋद्धिमा ओवरसीज मजदूर : "प्लॉट 662 उद्योग विहार फेज-5 स्थित फैक्ट्री में सुबह 9 से रात 8½ की ड्युटी है और रात 1 बजे तक रोकते हैं। दो सौ मजदूर हैं, ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं, हाजिरी कार्ड नहीं। तनखा हर महीने देरी से। छोड़ने पर किये काम के पैसों के लिये दौड़ाते हैं। सितम्बर के 20 दिन के पैसे मुझे आज 28 मार्च तक नहीं दिये हैं, तारीख देते रहते हैं — अब 31 मार्च को बुलाया है।"

स्पार्क श्रमिक : "प्लॉट 166 उद्योग विहार फेज-1 स्थित फैक्ट्री में काम करते एक हजार मजदूरों में ई.एस.आई. व पी.एफ. 2-4 की ही हैं। काम सुबह 9 बजे आरम्भ होता है और रात 2 बजे तक तो रोज होता है, सुबह के 5 भी बजा देते हैं। महीने में 200 घण्टे ओवर टाइम, भुगतान सिंगल रेट से, फरवरी में किये के पैसे आज 28 मार्च तक नहीं दिये हैं। हर महीने ओवर टाइम के पैसों में से 200 रुपये काट लेते हैं और एतराज पर साहब गाली देते हैं। फरवरी की तनखा 20 मार्च को दी।"

विन्टर वीयर कामगार : "प्लॉट 352 उद्योग विहार फेज-2 स्थित फैक्ट्री में एक ठेकेदार के जरिये हम 20 पुरुष और 10 महिला मजदूरों को धागे काटने व जाँचने के लिये रखा था। हमारी तनखा 2600 रुपये, ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं। महीने में 100 घण्टे ओवर टाइम, भुगतान सिंगल रेट से। फरवरी में ठेकेदार भाग गया तो हमारी नौकरी भी छूट गई। फरवरी में किये 13 दिन काम के पैसे हम ने कम्पनी से माँगे तो हमें नहीं दिये, बोले कि ठेकेदार ले गया।"

ओमेगा डिजाइन वरकर : "प्लॉट 863 उद्योग विहार फेज-5 स्थित फैक्ट्री में दो ठेकेदारों के जरिये हम 300 मजदूर रखे हैं। कम्पनी ने स्वयं एक भी मजदूर नहीं रखा है। हमारी तनखा से ई.एस.आई. व पी.एफ. के पैसे काटते हैं और ई.एस. आई. कार्ड देते हैं पर नौकरी छोड़ने पर फण्ड के पैसे नहीं मिलते।" **सरगम मजदूर :** "प्लॉट 210 उद्योग विहार फेज-1 स्थित फैक्ट्री में शिफ्ट सुबह 9 बजे आरम्भ होती है पर छूटने का समय नहीं है, रात 2 बजे तक काम। महीने में 150 घण्टे ओवर टाइम। और हाँ, ओवर टाइम का भुगतान दुगुनी दर से।"

ईस्टर्न मेडिकिट श्रमिक : "उद्योग विहार में कम्पनी की 4 फैक्ट्रियों में हम कैजुअल वरकरों की 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट हैं और ओवर टाइम का भुगतान सिंगल रेट से कम, 14 रुपये प्रतिघण्टा। फरवरी की तनखा हमें 20 मार्च को दी और ओवर टाइम के पैसे आज 28 मार्च तक नहीं दिये हैं।"

(बाकी पेज दो पर)

दिल्ली, नोएडा, सोनीपत, बहादुरगढ, गुड़गाँव, फरीदाबाद स्थित फैक्ट्रियों में हर मजदूर का कर्मचारी राज्य बीमा, ई.एस.आई. होनी चाहिये। मजदूर दो-चार दिन के लिये भर्ती की गई हो चाहे ठेकेदार के जरिये रखा गया हो — प्रत्येक मजदूर की ई.एस.आई. होनी चाहिये। यह कानून कहता है। **फैक्ट्री में काम करते किसी मजदूर की ई.एस.आई. नहीं होने का मतलब है : कम्पनी तथा सरकार के अनुसार वह मजदूर फैक्ट्री में काम नहीं करता-करती।** इस सन्दर्भ में 25-50 पैसे के पोस्ट कार्ड डालने के लिये कुछ पते :

1. श्रम मन्त्री, भारत सरकार
श्रम शक्ति भवन, रफी मार्ग, नई दिल्ली—110001
2. महानिदेशक, कर्मचारी राज्य बीमा निगम, कोटला रोड़, नई दिल्ली-110002
3. क्षेत्रीय निदेशक, कर्मचारी राज्य बीमा निगम, पंचदीप भवन, सैक्टर-16, फरीदाबाद— 121002 (पूरे हरियाणा के लिये)
4. क्षेत्रीय निदेशक, कर्मचारी राज्य बीमा निगम, डी.डी.ए. एस.सी.ओ., राजेन्द्रा प्लेस, नई दिल्ली-110008 (दिल्ली क्षेत्र के लिये)

दिल्ली में मजदूर

डी. ए. के 251 रुपये जुड़ने के बाद 1.02.2009 से दिल्ली सरकार द्वारा निर्धारित न्यूनतम वेतन प्रतिदिन 8 घण्टे काम और सप्ताह में एक दिन छुट्टी पर प्रतिमाह इस प्रकार हैं : अकुशल श्रमिक 3934 रुपये (8 घण्टे के 151 रु.); अर्ध-कुशल श्रमिक 4100 रुपये (8 घण्टे के 158रु); कुशल श्रमिक 4358 रुपये (8 घण्टे के 168रु) । यह कम से कम तनखायें हैं और नहीं दी जा रही हैं तो 25-50 पैसे के पोस्टकार्ड से शिकायत के लिये कुछ पते : 1. उप श्रमायुक्त (दक्षिण दिल्ली), कमरा 122-123, ए-विंग, पहला तल, पुष्पा भवन, पुष्प विहार, नई दिल्ली; 2. श्रम आयुक्त, 5 शामनाथ मार्ग, दिल्ली-110054

वीयरवैल इण्डिया मजदूर : " बी-134 ओखला फेज-1 स्थित फैक्ट्री में 600 मजदूर काम करते हैं और सब कम्पनी ने स्वयं रखे हैं पर ई.एस.आई. व पी.एफ. 200 के ही हैं । चार महीने से लगातार सुबह 9 से रात 1 बजे तक सब को रोकते हैं — फिनिशिंग में पुरुष मजदूरों को तो महीने में दस रोज सुबह 5 बजे तक रोक लेते हैं और फिर 9 बजे से ड्युटी । धागे काटने तथा पीस खोलने का काम करती 30 महिला मजदूर भी रात एक बजे छूटती हैं और फिर स्वयं अपने स्थानों को जायें, कम्पनी कोई प्रबन्ध नहीं करती । कम्पनी 200 को ही गेट पास देती है, 400 को नहीं — रास्ते में पुलिस परेशान करती है । रात 1 एक बजे छूट कर 3-4 महिलाओं समेत 100 मजदूर इक्ट्ठे तेखण्ड लौटते हैं इसलिये पुलिस से परेशानी नहीं होती पर जैतपुर, मीठापुर, संगमविहार वालों को कई बार पुलिस 4 बजे तक बैठा लेती है । साप्ताहिक छुट्टी नहीं, कोई छुट्टी नहीं, तीसों दिन काम । महीने में 3 बार 10 मिनट की देरी पर 4 घण्टे और 5 बार 10 मिनट देरी पर 8 घण्टे काट लेते हैं । एक दिन छुट्टी करने पर 2 से 7 दिन बैठा देते हैं । काम करते समय तबीयत खराब होने पर कहते हैं कि एक हफ्ते छुट्टी कर लो या हिसाब ले लो । थोड़ी-सी गलती पर नौकरी से निकाल देते हैं । सरकार द्वारा निर्धारित न्यूनतम वेतन देते हैं पर ओवर टाइम का भुगतान दुगुनी दर की बजाय सिंगल रेट से करते हैं । बेसमेन्ट में कटिंग तथा फिनिशिंग हैं और पहली मंजिल पर बहुत बड़ा व शानदार कार्यालय है परन्तु तीसरी मंजिल पर लगी 400 मशीनों पर सिलाई कारीगरों के बैठने की जगह बहुत कम है । कैन्टीन में मात्र 50 के लिये मेज-स्टूल हैं और चाय का भी प्रबन्ध नहीं है । भोजन इधर-उधर बैठ कर करते हैं । हाँ, पीने का पानी ठीक है और लैट्रिन साफ रहती हैं ।"

ब्ल्यू बर्ड रैपोग्रेफिक श्रमिक : " बी-17/1 व 17/3 ओखला फेज-2 स्थित फैक्ट्री में महीने के तीसों दिन 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट हैं । सप्ताह बाद शिफ्ट बदलती है — रात वाले शनिवार को पूरी रात काम करेंगे और फिर रविवार को पूरे दिन । शिफ्ट बदलने के समय इस लगातार 24 घण्टे ड्युटी के समय भोजन के लिये 25 रुपये देते हैं । अन्यथा, 12 घण्टे ड्युटी में एक कप चाय भी नहीं देते । ओवर टाइम का भुगतान सिंगल रेट से । फैक्ट्री में **एन सी ई आर टी, आउटलुक ग्रुप, गोयल ब्रदर्स** की बहुत किताबें छपती हैं । यहाँ छपाई में 70 मजदूर कम्पनी ने स्वयं रखे हैं और बाइंडिंग व डाई कटिंग में 80 मजदूर दो ठेकेदारों के जरिये रखे हैं । ई.एस.आई. व पी.एफ. 10 मजदूरों की ही हैं । तनखायें 2700 से 8000 रुपये । पीने का पानी खराब । लैट्रीन बहुत-ही गन्दी, दरवाजे टूटे । मैनेजर गाली देता है ।"

उषा एग्जिम कामगार : "ओखला फेज-3 स्थित फैक्ट्री में चमड़े के थैले और पत्थर के आभूषण निर्यात के लिये बनते हैं । मजदूरों की ई. एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं ।"

शाही एक्सपोर्ट वरकर : " एफ-88 ओखला फेज-1 स्थित फैक्ट्री पर जनवरी में **दिल्ली ब्रास मैटल वर्क्स** का नामपट्ट लगाया और अब मार्च में फिर शाही एक्सपोर्ट का — काम वही कपड़े सिलाई का । हैल्परों को 26 दिन की बजाय 30 दिन पर सरकार द्वारा निर्धारित न्यूनतम वेतन देते हैं । दो ठेकेदारों के जरिये रखे 650 मजदूरों की तनखा से जनवरी-दिसम्बर 08 के दौरान पी. एफ. राशि काटी थी पर पता नहीं भविष्य निधि कार्यालय में जमा की है अथवा नहीं ।"

ग्रामीण कथा—गाथा

दो सौ वर्ष से दस्तकारी-किसानी की सामाजिक मौत और सामाजिक हत्या का सिलसिला जारी है ; यह पूरी दुनिया की बात है । यूरोप और उत्तरी अमरीका से किसानों तथा दस्तकारों का सफाया-सा हो चुका है । आज अमरीका सरकार के क्षेत्र में आबादी का चार प्रतिशत ही खेतीबाड़ी में है और वह भी कम्पनियों में साहबों तथा मजदूरों के रूप में । फैक्ट्री-उत्पादन ने पहले दस्तकारी को मिटाया और फिर कृषि में फैक्ट्री-पद्धति किसानी खेती की मौत लिये है । यूरोप में फैक्ट्री-उत्पादन के फैलाव ने दस्तकारों-किसानों के एक हिस्से को मजदूरों में बदला, दूसरा हिस्सा दुकानदारों में परिवर्तित हुआ, और बड़ा हिस्सा उत्तरी अमरीका-आस्ट्रेलिया आदि स्थानों को खदेड़ दिया गया-पलायन कर गया । इसका एक परिणाम अमरीका-आस्ट्रेलिया में रह रहे समुदायों को निर्ममता से मिटाना रहा । और, यूरोप में स्थापित हुआ फैक्ट्री-उत्पादन विश्व-व्यापी बनता आया है । फिर, व्यापार में फैक्ट्री-पद्धति दुकानदारों का सफाया करती है । और फिर, भाप-कोयले वाली मशीनों के दौर में फालतू मजदूरों की बड़ी सँख्या को इलेक्ट्रोनिक्स ने बहुत अधिक बढा दिया है । आज संसार में करोड़ों बेरोजगार मजदूरों के संग एशिया-अफ्रीका-दक्षिणी अमरीका में तिल-तिल कर कट-मर रहे अरबों दस्तकार-किसान हैं. ....इन सब के लिये कहीं कोई जगह नहीं है । सामाजिक असंतोष अधिकाधिक विस्फोटक हो रहा है । "आतंकवाद" का शोर मचा कर सब देशों की सरकारें सामाजिक असन्तोष को आतंक के जरिये दबाने पर एकमत हैं, एकजुट हो रही हैं । भयभीत सरकारें ग्रामीण क्षेत्रों से शहरों में आ रही लोगों की बाढ को थामने के लिये खादी ग्रामोद्योग, किसानों की ऋण माफी, ग्रामीण रोजगार गारन्टी वाले रेत के बाँध भी खड़े कर रही हैं ।

ग्रामीण रोजगार गारन्टी योजना मजदूर : " मथुरा जिले के एक गाँव के दस्तकार परिवार से हूँ । आई.टी.आई. की । अप्रेन्टिस की । नौकरी के लिये मथुरा, आगरा, अहमदाबाद, गुड़गाँव, फरीदाबाद के चक्कर काटे । फरीदाबाद में एक फैक्ट्री में लगा और 6 महीने आद ब्रेक । फिर बेरोजगार...... अब दो महीने से नोएडा में एक फैक्ट्री में लगा हूँ । पहली बेरोजगारी में बरसों की परेशानी से सबक ले कर दूसरी बेरोजगारी के समय मैंने ग्रामीण रोजगार गारन्टी योजना में काम करना तय किया । पहला काम जुलाई 08 में ग्राम पंचायत के तहत तालाब से मिट्टी उठाने का मिला । फिर अगस्त-सितम्बर में सिंचाई विभाग से बम्बे से मिट्टी हटाने का काम मिला । कुल 21 दिन काम किया, कागजों में 22 दिन दिखाया । काम हम 35 मजदूरों ने किया पर कागजों में 50 दिखाये और 15 लोगों की घर बैठे हाजिरी लगी । खींच कर काम, भारी काम, मीटर से नाप कर — 50 की जगह 35 ने मिट्टी उठाई । भुगतान नवम्बर और दिसम्बर में जा कर । कहते हैं कि जीरो बैलेन्स पर बैंक खाता खुलेगा । खाता खोलने के 20-50 रुपये लिये । पहली किस्त दी तब 200 रुपये खाते में रखने के लिये रख लिये । दूसरी किस्त के समय भी 200 रुपये खाते के नाम पर रख लिये । पहली किस्त दी उस रोज सुबह 8 बजे हम सब को बैंक बुलाया और 3 बजे तक टरकाते रहे । फिर बोले कि कल आना । एतराज पर खर्चा माँगा और प्रत्येक से 20 रुपये लिये । हम से अँगुठे-हस्ताक्षर करवा कर पैसे शिक्षा मित्र तथा ग्राम विकास अधिकारी को दिये जिन्होंने हम 35 को 800-800 रुपये और घर बैठे हाजिरी बालों को 400-400 रुपये दिये । यही सब दूसरी किस्त के समय हुआ.... खर्चे के नाम पर 20 की बजाय 50 रुपये काटे तो हम ने विरोध किया जिस पर धमकी दी — दुबारा भी तो काम पड़ेगा । दूसरी बार भी हम 35 को 800-800 रुपये और घर बैठे हाजिरी वाले 15 को 400-400 रुपये दिये । हमारी पास बुक बैंक वालों के पास रहती हैं और जॉब कार्ड शिक्षा मित्र के पास । दिहाड़ी 100 रुपये कहते हैं पर काम करने वालों को 70 रुपये भी नहीं पड़ते और वह भी दिहाड़ी तोड़ कर परेशानी के संग कई महीने बाद । ऐसे में हम ने योजना से छुट्टी कर ली और जनवरी में बागवानी का काम आया तो गाँव के किसी मजदूर ने नहीं किया । शिक्षा मित्र और ग्राम विकास अधिकारी ने हमें समझाया था कि मण्डल, जिला, ब्लॉक अधिकारियों को पैसे देने होते हैं और तुम्हारे लिये हम मोटरसाइकिल पर आते-जाते हैं, इस सब पर खर्च होता है । नवम्बर-दिसम्बर में शिक्षा मित्र जब हमें पैसे बाँट रहा था तब उसे सरकार से दस महीनों की तनखायें नहीं मिली थी ।"

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक एवं सम्पादक शेर सिंह के लिए जे0 के0.आफसैट दिल्ली से मुद्रित किया ।

RN 42233 पोस्टल रजिस्ट्रेशन L/HR/FBD/73-2011